रविवार 13 जून, 2021

विषय **— भगवान मनुष्य के संरक्षक**

स्वर्ण पाठ: **भजन संहिता 121 : 8**

"यहोवा तेरे आने जाने में तेरी रक्षा अब से ले कर सदा तक करता रहेगा॥"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 16 : 1, 8, 9**
2 शमूएल 22: 33
2 इतिहास 16: 9
1 राजा 8: 61

1 हेईश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूं।
8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा॥
9 इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी आत्मा मगन हुई; मेरा शरीर भी चैन से रहेगा।
33 यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति दृढ़ क़िला है, वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग में लिए चलता है।
9 देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए।
61 तो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा रहे, कि आज की नाईं उसकी विधियों पर चलते और उसकी आज्ञाएं मानते रहो।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 32 : 3 (वर्णन), 4 (*से 1st* :)

3 … तुम अपने परमेश्वर की महिमा को मानो!
4 वह चट्टान है, उसका काम खरा है॥

2. भजन संहिता 37: 37

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

37 खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहने वाले पुरूष का अन्तफल अच्छा है।

3. अय्यूब 1 : 1, 6-9 (*से 2nd* ,), 11, 12, 14 (*से 2nd* ,), 16 (आग) (*से* ;), 18 (तेरा)-20

1 ऊज़ देश में अय्यूब नाम एक पुरुष था; वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से परे रहता था।
6 एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके साम्हने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया।
7 यहोवा ने शैतान से पूछा, तू कहां से आता है? शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, कि पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।
8 यहोवा ने शैतान से पूछा, क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला मनुष्य और कोई नहीं है।
9 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया,
11 परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।
12 यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना। तब शैतान यहोवा के साम्हने से चला गया।
14 तब एक दूत अय्यूब के पास आकर कहने लगा,
16 परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और उस से भेड़-बकरियां और सेवक जलकर भस्म हो गए।
18 तेरे बेटे-बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे,
19 कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली, और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा, कि वह जवानों पर गिर पड़ा और वे मर गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।
20 तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् कर,

4. अय्यूब 2 : 3 (*से 1st* ,), 3 (फिर भी) (*से* ,), 4 (*से 2nd* ,), 5-7, 11, 13 (के लिये)

3 यहोवा ने शैतान से पूछा … तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है।
4 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया।
5 सो केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।
6 यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।
7 तब शैतान यहोवा के साम्हने से निकला, और अय्यूब को पांव के तलवे से ले सिर की चोटी तक बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया।

11 जब तेमानी एलीपज, और शूही बिलदद, और नामाती सोपर, अय्यूब के इन तीन मित्रों ने इस सब विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थीं, तब वे आपस में यह ठान कर कि हम अय्यूब के पास जा कर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको शान्ति देंगे, अपने अपने यहां से उसके पास चले।
13 … परन्तु उसका दु: ख बहुत ही बड़ा जान कर किसी ने उस से एक भी बात न कही।

5. अय्यूब 3 : 1, 3, 25 (*से*,)

1 इसके बाद अय्यूब मुंह खोल कर अपने जन्मदिन को धिक्कारने
3 वह दिन जल जाए जिस में मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिस में कहा गया, कि बेटे का गर्भ रहा।
25 क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है।

6. अय्यूब 4 : 1, 3, 5

1 तब तेमानी एलीपज ने कहा,
3 सुन, तू ने बहुतों को शिक्षा दी है, और निर्बल लोगों को बलवन्त किया है।
5 परन्तु अब विपत्ति तो तुझी पर आ पड़ी, और तू निराश हुआ जाता है; उसने तुझे छुआ और तू घबरा उठा।

7. अय्यूब 6 : 1

1 फिर अय्यूब ने कहा,

8. अय्यूब 7: 20

20 हे मनुष्यों के ताकने वाले, मैं ने पाप तो किया होगा, तो मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा? तू ने क्यों मुझ को अपना निशाना बना लिया है, यहां तक कि मैं अपने ऊपर आप ही बोझ हुआ हूँ?

9. अय्यूब 8: 1, 3, 19, 20

1 तब शूही बिलदद ने कहा,
3 क्या ईश्वर अन्याय करता है? और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को उलटा करता है?
19 देख, उसकी आनन्द भरी चाल यही है; फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेंगे।
20 देख, ईश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जान कर छोड़ देता है, और न बुराई करने वालों को संभालता है।

10. अय्यूब 9: 1, 20, 21

1 तब अय्यूब ने कहा,
20 चाहे मैं निर्दोष ही क्यों न हूँ, परन्तु अपने ही मुंह से दोषी ठहरूंगा; खरा होने पर भी वह मुझे कुटिल ठहराएगा।
21 मैं खरा तो हूँ, परन्तु अपना भेद नहीं जानता; अपने जीवन से मुझे घृण आती है।

11. अय्यूब 11: 1, 6 (जानना), 7

1 तब नामाती सोपर ने कहा:
6 इसलिये जान ले, कि ईश्वर तेरे अधर्म में से बहुत कुछ भूल जाता है।
7 क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता है?

12. अय्यूब 38: 1-4, 33

1 तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी में से यूं उत्तर दिया,
2 यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर युक्ति को बिगाड़ना चाहता है?
3 पुरुष की नाईं अपनी कमर बान्ध ले, क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे उत्तर दे।
4 जब मैं ने पृथ्वी की नेव डाली, तब तू कहां था? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे।
33 क्या तू आकाशमण्डल की विधियां जानता और पृथ्वी पर उनका अधिकार ठहरा सकता है?

13. अय्यूब 40: 8, 10

8 क्या तू मेरा न्याय भी व्यर्थ ठहराएगा? क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा से मुझ को दोषी ठहराएगा?
10 अब अपने को महिमा और प्रताप से संवार और ऐश्वर्य्य और तेज के वस्त्र पहिन ले।

14. अय्यूब 42: 1, 2, 3 (इसलिये), 5, 7, 8 (जाओ) (*से 1st* :), 9 (*से* :), 10, 12 (*से* :)

1 तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया;
2 मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती।
3 … परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिन को मैं जानता भी नहीं था।
5 मैं कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं;

7 और ऐसा हुआ कि जब यहोवा ये बातें अय्यूब से कह चुका, तब उसने तेमानी एलीपज से कहा, मेरा क्रोध
तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी
तुम लोगों ने नहीं कही।
8 मेरे दास अय्यूब के पास जा कर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना
करेगा
9 यह सुन तेमानी एलीपज, शूही बिल्दद और नामाती सोपर ने जा कर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया।
10 जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोरवा ने उसका सारा दु:ख दूर किया, और जितना
अय्यूब का पहिले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया।
12 और यहोवा ने अय्यूब के पिछले दिनों में उसको अगले दिनों से अधिक आशीष दी।

15. 2 तीमुथियुस 1: 1, 2, 7

1 पौलुस की ओर से जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह
यीशु का प्रेरित है।
2 प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम॥ परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया
और शान्ति मिलती रहे॥
7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

16. 2 तीमुथियुस 2: 1

1 इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा।

17. 2 तीमुथियुस 3: 2 (*से 1st*,), 4 (सुख के प्रेमी), 5, 14

2 क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी।
4 … परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे।
5 वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना।
14 पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन
लोगों से सीखा था

18. 2 कुरिन्थियों 13 : 11 (परिपूर्ण हों)

11 सिद्ध बनते जाओ; ढाढ़स रखो; एक ही मन रखो; मेल से रहो, और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर
तुम्हारे साथ होगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 550 : 5-14

ईश्वर ही जीवन या बुद्धि है, जो जानवरों के साथ-साथ पुरुषों की व्यक्तित्व और पहचान को बनाता और संरक्षित करता है। भगवान परिमित नहीं हो सकता है, और भौतिक सीमा के भीतर सीमित हो सकता है। आत्मा न तो पदार्थ बन सकता है, न ही आत्मा इसके विपरीत विकसित हो सकती है। इस बात की जाँच करने के लिए कि भौतिक जीवन, जो समाप्त होता है, यहाँ तक कि जैसे ही यह शुरू होता है, यह सब कुछ क्या है? होने का वास्तविक अर्थ और इसकी शाश्वत पूर्णता अब दिखाई देनी चाहिए, भले ही यह उसके बाद भी हो।

2. 302 : 14 (हमें करने दो)-24

... आइए याद रखें कि सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी हमेशा के लिए अस्तित्व में है, और किसी भी जीवन, पदार्थ और बुद्धि के नश्वर भ्रम से परे और हमेशा मौजूद है। यह कथन तथ्य पर आधारित है, काल्पनिक नहीं। मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

3. 393 : 16-18

अपनी समझ में दृढ़ रहें कि दिव्य मन शासन करता है, और यह कि विज्ञान में मनुष्य ईश्वर की सरकार को दर्शाता है।

4. 14 : 1-11

यदि हम शरीर के साथ समझदार हैं और एक निगम, भौतिक व्यक्ति, जिसका कान हम प्राप्त करेंगे, के रूप में सर्वशक्तिमानता का सम्मान करते हैं, हम आत्मा के प्रदर्शन में "शरीर से अनुपस्थित" और "प्रभु के साथ उपस्थित" नहीं हैं। हम "दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकते।" "प्रभु के साथ वर्तमान" होना, केवल भावनात्मक परमानंद या विश्वास नहीं है, बल्कि वास्तविक प्रदर्शन और जीवन की समझ है जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में सामने आया है। "प्रभु के साथ" होना ईश्वर के कानून का पालन करना है, परमात्मा द्वारा पूर्ण रूप से शासित होना, - आत्मा द्वारा, पदार्थ द्वारा नहीं।

5. 261 : 31-23

हमें अच्छे और मानव जाति को याद करने में अपने शरीर को भूल जाना चाहिए। हर घंटे आदमी की अच्छी मांग, जिसमें होने की समस्या को हल करना। भलाई के प्रति समर्पण मनुष्य की ईश्वर पर निर्भरता को कम नहीं करता, बल्कि उसे बढ़ाता है। न तो अभिषेक परमेश्वर के प्रति मनुष्य के दायित्वों को कम करता है, बल्कि उनसे मिलने की सर्वोपरि आवश्यकता को दर्शाता है। क्रिश्चियन साइंस भगवान की पूर्णता से शून्य है, लेकिन यह उसे पूरी महिमा का वर्णन करता है। "बूढ़े आदमी को उसके कामों से दूर करने" के द्वारा, नश्वर "अमरता को पहिन लेते हैं।"

हम नश्वर विश्वास के उथलेपन में गोता लगाकर ईश्वर की रचना की प्रकृति और गुणवत्ता को थाह नहीं दे सकते। हमें जीवन में सत्य और भौतिकता को खोजने के अपने अथक स्पंदन को उलट देना चाहिए - और ईश्वर के अमर विचार के लिए नश्वर से ऊपर, भौतिक इंद्रियों की गवाही से ऊपर उठना होगा। ये स्पष्ट, उच्च विचार भगवान-जैसे मनुष्य को उसके अस्तित्व के पूर्ण केंद्र और सीमा तक पहुंचने के लिए प्रेरित करते हैं।

अय्यूब ने कहा: "मैं कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं;" पुरुष अय्यूब के विचार को प्रतिध्वनित करेंगे, जब पदार्थ का दर्द और सुख पूर्वसूचक होना बंद हो जाएगा। वे फिर जीवन और खुशी, खुशी और दुःख के झूठे अनुमान को छोड़ देंगे, और प्रेमपूर्वक आनंद प्राप्त करने, धैर्य से काम लेने और ईश्वर के विपरीत सभी को जीतने का आनंद प्राप्त करेंगे।

6. 231 : 20-2

अपने आप को पाप से श्रेष्ठ बनाने के लिए, क्योंकि परमेश्वर ने आपको इससे श्रेष्ठ बनाया है और मनुष्य को नियंत्रित करता है, सच्चा ज्ञान है। पाप से डरने के लिए प्रेम की शक्ति और ईश्वर के मनुष्य के संबंध में होने के दिव्य विज्ञान को गलत समझना है, - अपनी सरकार पर संदेह करना और उसकी सर्वशक्तिमान देखभाल पर अविश्वास करना। अपने आप को बीमारी और मौत से बेहतर पकड़ना भी उतना ही बुद्धिमानी है, और ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार है। उनसे डरना असंभव है, जब आप भगवान को पूरी तरह से समझ लेते हैं और जानते हैं कि वे उनकी रचना का हिस्सा नहीं हैं।

मनुष्य, अपने निर्माता द्वारा शासित, जिसके पास कोई अन्य मन नहीं है, - इंजीलवादी के कथन पर लगाया गया है कि "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न [दैवीय कथन] हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई," — पाप, बीमारी और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

7. 259 : 6-14

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

8. 192 : 4-10

हम वैज्ञानिक हैं, केवल तभी जब हम उस पर अपनी निर्भरता छोड़ देते हैं जो असत्य है और सत्य को समझ लेते हैं। हम तब तक वैज्ञानिक नहीं हैं जब तक हम सब कुछ मसीह पर छोड़ नहीं देते। मानवीय विचार आध्यात्मिक नहीं हैं। वे कान की सुनवाई से, सिद्धांत के बजाय भौतिकता से, और अमर के बजाय नश्वर से आते हैं। आत्मा ईश्वर से अलग नहीं है। आत्मा ईश्वर है।

9. 99 : 23-29

सच्ची आध्यात्मिकता की शांत, मजबूत धाराएँ, जिनमें से अभिव्यक्तियाँ स्वास्थ्य, पवित्रता और आत्म-विनाश हैं, मानव अनुभव को गहरा करना चाहिए, जब तक कि भौतिक अस्तित्व की मान्यताओं को एक गंजेपन के रूप में नहीं देखा जाता है, और पाप, बीमारी, और मृत्यु ईश्वरीय आत्मा के वैज्ञानिक प्रदर्शन और परमेश्वर के आध्यात्मिक, सिद्ध इंसान को हमेशा के लिए जगह देते हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6